موضوع الخطبة : **مقتضيات الإيمان باليوم الآخر – جزء 4**

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :طارق بدر السنابلي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

प्रलय के दिन पर विश्वास करने हेतु आवश्यकताएं।

भाग: ०४ (स्वर्ग की विशेषताएं)

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَـــه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वश्रेष्ठ मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं सबसे दुष्ट चीज़ धर्म में अविष्कार किए गए नवोन्मेष हैं प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ नवाचार है, हर नवाचार गुमराही है एवं हर गुमराही नरक की ओर ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह से भयभीत रहो एवं उसका डर अपनी बुद्धि एवं हृदय में जीवित रखो, उसके आज्ञाकार बने रहो एवं अवज्ञा से वंचित रहो, ज्ञात रखो कि अल्लाह तआ़ला अपने विधान में, अपने भाग्य (वितरण करने) में और अपने बदले एवं यातना में सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान है एवं अल्लाह तआ़ला की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि उसने अपने सृष्टि हेतु एक समय स्थित किया है जिसमें उन्हें

उन कर्मों का बदला देगा जिन को अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से उन पर अनिवार्य किया, अल्लाह तआ़ला का कथन है :

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون * فتعالى الله الملك الحق﴾.

अर्थात: क्या तुम्हें यह भ्रम है कि हमने तुम्हें निरर्थक पैदा किया है एवं यह की तुम हमारी ओर नहीं लौटाए जाओगे?

ए मोमिनो! पूर्व के उपदेशों में प्रलय के दिन पर विश्वास करने हेतु आवश्यकताओं के संबंध में कुछ बातें वर्णित की गईं जो तुरही फूंकने, सर्वश्रेष्ठ क़यामत के लक्षण, सृष्टि के उठाए जाने, न्याय के मैदान में मनुष्यों के एकत्रित होने एवं लाभ-व-यातना (जैसी बातों) आधारित पर थीं, एवं आज हम इन्-शा-अल्लाह स्वर्ग से संबंधित कुछ बातों का उल्लेख करेंगे जिसको अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों हेतु तैयार किया है:

१. स्वर्ग एवं नरक में विश्वास रखना प्रलय के दिन पर विश्वास रखने में सम्मिलित है, और ये दोनों सृष्टि का शाश्वत निवास है, स्वर्ग आनंदो का गृह है, इसे अल्लाह तआ़ला ने उन विश्वासियों एवं धर्मनिष्ठ मनुष्यों हेतु तैयार किया है जिन्होंने हर उस आदेश पर विश्वास किया जिन पर अल्लाह ने विश्वास करना अनिवार्य किया है, इसी प्रकार उन्होंने अल्लाह एवं उसके दूत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारीता की, एवं स्वर्ग के अंदर विभिन्न प्रकार की ऐसी ऐसी विलासिताएं हैं जिनको न किसी नेत्र ने देखा, न किसी कान में सुना एवं ना ही किसी के हृदय पर उसके संबंध में कोई विचार आया, अल्लाह का कथन है :

﴿إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّـــالِحَاتِ أُوْلَئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ * جَزَاؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ﴾

अर्थात: नि: संदेह जिन्होंने विश्वास किया एवं पुण्य-कर्म किए, यही सर्वश्रेष्ठ मनुष्य हैं, उनका बदला उनके पालनहार के निकट शाश्वत स्वर्ग हैं, जिनके नीचे दरिया बह रही है।, अल्लाह तआ़ला इनसे प्रसन्न हुआ और यह अल्लाह से प्रसन्न हुए, यह उसके लिए है जो अपने पालनहार से भयभीत रहे।

इसके अतिरिक्त अल्लाह के कथन है :

﴿فَلا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم من قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاء بِمَا كَانُوا يَعْمَلُون﴾ .

अर्थात: किसी को ज्ञात नहीं जो कुछ हमने उनके नेत्रों के ठंडक हेतु छुपा कर रखा है, यह जो कुछ पुण्य-कर्म करते थे इसी का बदला है।२. ए विश्वासियों की मण्डली! स्वर्ग के १०० स्थान हैं, उ़बादह बिन सामित रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: स्वर्ग के १०० स्थान हैं, हर दो स्थान के बीच एक वर्ष की दूरी है, एवं अ़फ़्फान कहते हैं: उदाहरण स्वरूप आकाश एवं पृथ्वी के बीच की दूरी, और फ़िरदौस सर्वश्रेष्ठ स्थान है, एवं इसी से चार दरिया बहते हैं, एवं सिंहासन (अ़र्श) इसके ऊपर है, इस कारणवश अल्लाह से जब भी मांगो फ़िरदौस मांगो।

(अहमद: ३१६/५, मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसे सहीह कहा है।)

३. ए मुसलमानो! स्वर्ग किसी एक बाग़ीचे का नाम नहीं बल्कि अनेक बग़ीचों है का नाम है, इसी प्रकार इस की विलासिता भी एक समान नहीं बल्कि विभिन्न प्रकार की हैं, एवं स्वर्ग के अंदर स्वर्ग वासी भी अपने पुण्य-कर्मों के आधार पर अलग-अलग स्थानों में होंगे। इस कारणवश दो बाग़ीचे एवं उनके अंदर उपस्थित विलासिता की संपूर्ण सामग्री स्वर्ण की हैं एवं दो बाग़ीचे एवं उनके अंदर

उपस्थित विलासिता की संपूर्ण सामग्री चांदी की हैं, जैसा कि प्रथम २ बाग़चों के संबंध में अल्लाह का कथन है :

﴿ولمن خاف مقام ربه جنتان﴾

अर्थात: उस व्यक्ति के लिए जो अपने पालनहार के समक्ष खड़ा होने से भयभीत हुआ; दो स्वर्ग हैं।

फिर उन दो बाग़ीचों के संबंध में अल्लाह का कथन है जिन का स्थान उपरोक्त दो बाग़ीचों की तुलना में विलासिता के संदर्भ में कुछ कम है :

﴿ومِن دونهما جنتان﴾ .

अर्थात: उनके अतिरिक्त (उन से कम स्थान के) दो स्वर्ग और हैं।

अल्लामा इब्ने जरीर तबरी रहिमहुल्लाह इन दोनों श्लोकों के उल्लेख में अबू मूसा अंशअ़री रज़ि अल्लाहु अन्हू मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि स्वर्ण के दो बाग़ीचे अल्लाह से निकट रहने वालों के लिए हैं एवं चांदी के दो बग़ीचे यमीन वालों के लिए हैं,

अब्दुल्लाह बिन क़ैस (अबू मूसा अंशअ़री रज़ि अल्लाहु अन्हू) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दो बिग़ीचे चांदी के हैं एवं उन दोनों के बर्तन व अन्य सामग्री भी चांदी के होंगे, दो बिग़ीचे स्वर्ण के हैं एवं उन दोनों के बर्तन व अन्य सामग्री भी स्वर्ण के होंगे, सदैव वाले स्वर्ग में स्वर्ग वासी एवं उनके पालनहार के भेंट के कुछ भी ओट नहीं होगा, परंतु सर्वोच्च पालनहार के मुखड़े पर सर्वोच्चता की चादर अवश्य होगी"। (बुख़ारी: ७४४४, मुस्लिम: १८०)

अल्लाह के दासो! उचित होगा कि सर्वप्रथम व्यक्तियों एवं यमीन वालों के बीज जो अंतर है उसका उल्लेख कर दिया जाए, तो

सर्वप्रथम व्यक्तियों का अर्थ वह लोग हैं जो अनिवार्य आदेशों एवं नवाफ़िल का कठोरता से पालन करते हैं, एवं अवज्ञा के कार्यों व दुष्कर्मों से वंचित रहते हैं, रही बात यमीन वालों की (जिनको अबरार भी कहा जाता है) तो यह लोग भी अनिवार्य आदेशों का पालन करते हैं एवं दुष्ट कार्य से वंचित रहते हैं किंतु नवाफ़िल का कठोरता से पालन नहीं करते हैं एवं कभी-कभार घृणित (मकरूह) कामों में पड़ जाते हैं, परंतु दोनों प्रकार के लोग अवज्ञा से पूर्णत: वंचित रहते हैं, चाहे उनका संबंध महापापों से हो या फिर छोटे पापों से, और फिर ये सारे व्यक्ति क्षमा प्राप्त करने में शीघ्रता को अपनाते हैं, इस कारणवश इनकी स्थिति पूर्व की तुलना में अधिक उत्तम हो जाती है, फिर भी प्रथम व्यक्तियों की शीलता यमीन वालों की तुलना में हर प्रकार से सर्वोच्च है, सवाब के संदर्भ में अबरार व्यक्तियों की तुलना में प्रथम व्यक्तियों की श्रेष्ठता का कारण प्रसिद्ध है, वह इस कारणवश की प्रथम व्यक्तियों ने अल्लाह की आज्ञाकारी में, अवज्ञा से वंचित रहने में अधिक से अधिक परिश्रम का प्रदर्शन किया है, इसी प्रकार उन्होंने इस्लाम के प्रचार-प्रसार की अनिवार्यता को पूरा करके, लोगों को भलाई का आदेश एवं पापों से वंचित रखने के दायित्व को संभाल कर के, युद्ध एवं दान-पुण्य के माध्यम से, दो (झगड़ते हुए) व्यक्तियों के बीच शांति उत्पन्न करके, मस्जिद के निर्माण एवं पुण्य-कर्मों में बढ़-चढ़ कर भागीदारी ले करके अन्य व्यक्तियों के हित में लाभदायक भी हुए हैं, रही बात अबरार की तो उपरोक्त चीज़ों में प्रथम व्यक्तिगण उनसे कहीं

आगे हैं। अबरार पर प्रथम व्यक्तियों की श्रेष्ठा का एक साक्ष्य यह भी है, अल्लाह तआ़ला का प्रथम व्यक्तियों के संबंध में कथन है :

﴿يحلون فيها من أساور من ذهب﴾

अर्थात: जहां वो स्वर्ण के कंगन पहनाए जाएंगे।

एवं अबरार के संबंध में अल्लाह का कथन:

﴿وحُلُّوا أساور من فضة﴾.

अर्थात: एवं उन्हें चांदी के आभूषण पहनाए जाएंगे।

एवं अल्लाह तआ़ला ने सूरह-ए-वाक़िअ़ह के प्रारंभिक एवं अंतिम भाग में प्रथम व्यक्तियों एवं अबरार व्यक्तियों की विलासिताओं के बीच जो अंतर है उसकी ओर संकेत दिया है।४. अल्लाह के दासो! एक ही विशेषता वाले स्वर्ग वासी भी आपस में विभिन्न स्थानों में होंगे, प्रथम व्यक्तिगण अपने पुण्य-कर्मों के आधार पर अलग-अलग विलासिताओं में होंगे, एवं यही बात यमीन वालों अर्थात अबरार व्यक्तियों के संग होगी, अबू सई़द खुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: "स्वर्ग वासी अपने से उच्च स्थान वालों की ओर उसी प्रकार देखेंगे जिस प्रकार लोग पश्चिमी या पूर्वी किनारों पर चमकते हुए सितारों को देखते हें, क्योंकि स्वर्ग वासियों का स्थान आपस में आवश्यक रूप से विभिन्न होगा, लोगों ने प्रश्न किया: हे अल्लाह के दूत! ये तो दूतों के अस्थान हैं, इनके स्थान तक कोई नहीं पहुंच सकता? आपने (उत्तर देते हुए) कहा: क्यों नहीं, उस जीव की क़सम जिसके हस्त में मेरा प्राण है! जिन्होंने अल्लाह पर विश्वास किया एवं अपने दूत का सत्यापित किया, (नि: संदेह वो इन स्थानों को प्राप्त कर लेंगे।)"

(बुख़ारी: ३२६५, मुस्लिम: २८३१)

५. ए मुसलमानो! स्वर्ग वासियों की विलासिताएं अधिक से अधिक श्रेष्ठ होती चली जाएंगे, परंतु वे पुरानी नहीं होंगी, अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "स्वर्ग में एक बाज़ार है जिसमें प्रत्येक शुक्रवार को (स्वर्ग वासी) आया करेंगे, उस दिन उत्तर की ओर से ऐसी हवा चलेगी जो उनके मुखड़ो एवं वस्त्रों पर फैल जाएगी, एवं वो लोग सुंदरता में अधिक हो जाएंगे, अपने परिवार के पास लौट कर आएंगे तो वह भी सुंदरता में बढ़े हुए होंगे, उनके परिवार वाले उनसे कहेंगे: अल्लाह की क़सम! हमारे पास से जाने के बाद तुम्हारी सुंदरता अधिक बढ़ गई है, वो कहेंगे: और तुम भी अल्लाह की क़सम! हमारे पीछे तुम लोग भी अधिक सुंदर हो गए हो।

(मुस्लिम: २८३४)

६. ए अल्लाह के दासो! स्वर्ग के श्रेष्ठ विलासिताओं में से स्वर्ग की महिलाएं भी हैं, धार्मिक तथ्य इस बात को दर्शाते हैं कि प्रत्येक विश्वासियों के संग दो हूरें होंगी, साथ ही वो महिलाएं भी जो सांसारिक जीवन में उनकी पत्नियां हुआ करती थीं, एवं अल्लाह तआ़ला विश्वासियों के पुण्य-कर्मों के अनुसार जितना चाहेगा अधिक हूरें प्रदान करेगा, हूर की विलासिता के संबंध में कई एक क़ुरआन के श्लोक एवं नबी के कथन स्थित हैं, उदाहरण स्वरूप अल्लाह का कथन है :

(وَحُورٌ عِينٌ * كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُون)

अर्थात: एवं बड़ी-बड़ी नेत्रों वाली ह़ूरें हैं जो छुपे हुए मोतियों के समान हैं।

सअ़दी का कथन है: "इस श्लोक का अर्थ वह महिलाएं हैं, जिनके नेत्रों में सुरमा होगा, वो अति सुंदर एवं परिचित होंगी, एवं (عِين) **का अर्थ अधिकतम सुंदर एवं बड़ी-बड़ी नेत्र हैं, एवं स्त्रीलिंग की नेत्रों की सुंदरता उनके अति सुंदर होने का साक्ष्य हुआ करती है, एवं अल्लाह का कथन** (كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ): **(जो छुपे हुए मोती के समान हैं) अर्थात: मानो कि वह उजला चमाचम पारदर्शितापूर्ण एवं सुंदर मोतियां हों** (ٱلْمَكْنُون) **,अर्थात: वह अन्य व्यक्तियों के दृष्टि से हवाओं एवं तापमान से सुरक्षित हो, जिसका रंग अत्यंत सुंदर एवं किसी भी प्रकार की त्रुटि ना हो, जिनके अंदर किसी भी प्रकार की कोई कमी ना होगी, बल्कि पूर्णतः गुणवत्ता वाली एवं अति सुंदर होंगी, आप उनके संबंध में जितनी भी बुद्धि लगाएंगे, आपको वही मिलेगा जो आपके हृदय को प्रसन्नता एवं आपके नेत्रों को ठंडक प्रदान करेगा।" सअ़दी रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।**

एक दूसरा श्लोक भी उनकी गुणवत्ता का उल्लेख करता है, अल्लाह का कथन है :

(كأنهن الياقوت والمرجان)

अर्थात: वो ह़ूरें याक़ूत की एवं मूंगे के होंगी।मानो कि वह पारदर्शिता में याक़ूत की तरह एवं उजलेपन में मरजान की तरह होंगी।

)इस सम्मान पूर्वक श्लोक का यह उल्लेख इब्ने जरीर तबरी रहिमहुल्लाह ने इब्ने ज़ैद से रिवायत किया है।(

स्वर्ग वासी महिलाओं के संबंध में अल्लाह का कथन है :

(إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنْشَاءً * فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا * عُرُبًا أَتْرَابًا)

अर्थात: हमने (उनकी पत्नियों) को विशेष रूप से बनाया है, एवं हमने उन्हें कवारियां बना दिया है, प्रेम करने वालियों एवं एक ही आयु की हैं।

अल्लाह का कथन (عُرُبًا) **:का अर्थ यह है कि वो अपने पतियों से अत्यंत प्रेम करने वाली होंगी, एवं** (أَتْرَابًا) **अर्थात: सभी का आयु एक ही अर्थात ३३ वर्ष का होगा।**

इसी प्रकार अल्लाह ने उनकी पारदर्शिता का उल्लेख करते हुए फ़रमाया :

(وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُون)

अर्थात: उनके लिए स्वच्छता पूर्वक पत्नियां हैं एवं वे उन स्वर्गों में सदैव रहने वाले हैं।

इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन है: "अर्थात वो महिलाएं माहवारी, मल मूत्र एवं प्रत्येक उन चीज़ों से पारदर्शितापूर्ण होंगी जो उनके लिए सांसारिक जीवन में दुखद हुआ करती थीं, इसी प्रकार उनका भीतरी भाग लज्जा से, अपने पतियों की क्रूरता से, उन पर निराधार आरोप लगाने से एवं अपने पतियों के अतिरिक्त अन्य पुरुषों की इच्छा से स्वच्छ होगा।" इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

(रौज़तुल्-मुहिब्बीन)

इसी प्रकार अल्लाह ने उनकी एक गुणवत्ता यह बताई कि वह अपने पतियों के अतिरिक्त (अन्य व्यक्तियों से) अपनी निगाहें नीची रखेंगी, अल्लाह का कथन है :

(فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ)

अर्थात: वहां (संकोची) नेत्रों वाली हूरें हैं।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है :

(حُورٌ مَقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ)

अर्थात: गोरी रंगत की हूरें स्वर्ग के तंबू में रहने वालीयां हैं।

इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन है: "उनका यह गुण कि वह (स्वर्ग के तंबू में रहने वालीयां हैं) अर्थात: वह अपने पतियों के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए श्रृंगार नहीं करेंगी बल्कि वो अपने पतियों हेतु ही विशेष होंगी, वह उनके गृहों से बाहर नहीं निकलेंगी, स्वयं को अपने पतियों हेतु इस प्रकार घेर लेंगी कि उनके अतिरिक्त (अपने पास) किसी को फटकने तक नहीं देंगी, अल्लाह पाक ने उन्हें इस प्रकार वर्णित किया है कि (तंबू में रहने वालीयां हैं) यह गुण पूर्व के गुण से कहीं अधिक अच्छा एवं पूर्ण है, इस कारणवश उनमें से एक महिला अपने पति से अथाह प्रेम एवं उनसे अपनी सहमति का प्रदर्शन करने हेतु अपने नयनों को झुकाए रखेंगी एवं उसके अतिरिक्त किसी अन्य पर उसकी निगाह नहीं पड़ेगी।" इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ। (रौज़तुल्-मुहिब्बीन) नबी की हदीसों में उनकी गुणवत्ता एवं सुंदरता के संबंध में जिन बातों का उल्लेख किया गया है उनसे बुद्धियां अचंभित रह जाती हैं, उदाहरण स्वरूप: अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: सर्वप्रथम मण्डली जो स्वर्ग में प्रवेश करेगी उनके मुख चमकते हुए चंद्रमा की तरह प्रकाशित होंगी, उनके पश्चात जो मण्डली प्रवेश करेगी उनके मुख आकाश में चमकते सितारों की तरह दीप्तिमान होंगे, संपूर्ण के हृदय एक समान होंगे, उनमें आपस

में ना तो घृणा एवं बिगाड़ होगा और ना ही ईर्ष्या द्वेष (ह़सद) एवं

शत्रुता (इ़नाद) होगी, प्रत्येक स्वर्ग वासी हेतु ह़ूर-ए-ईन में से दो पत्नियां होंगी, वह इस प्रकार सुंदर होंगी के उनकी पिंडलियों का गूदा हड्डी एवं मांस के ऊपर से देखा जा सकेगा। (बुख़ारी: ३२४६, मुस्लिम: २८३४)

इब्ने ह़जर रहिमहुल्लाह का कथन है: "ह़ूर वो हैं जिन्हें देखने के पश्चात नयन अचंभित रह जाएंगे, उनके वस्त्रों के पीछे से उनकी पिंडलियों के मांस दिखाई देंगे, देखने वाले को उनके कलेजे में पतले चमड़े एवं अति सुंदर रंगत के कारण अपना मुखड़ा आईने की तरह दिखाई पड़ेगा।"

(फ़तहुल्-बारी)

अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यदि स्वर्ग की महिलाओं में से कोई महिला पृथ्वी की ओर झांके तो आकाश से लेकर धरती तक दीप्तिमान हो जाए, एवं उसे सुगंध से भर दे, उस महिला का दुपट्टा संसार एवं उसमें उपस्थित संपूर्ण चीज़ों से अधिक अच्छा है"।

(बुख़ारी: २७९६)

●लाभ हेतु एक प्रश्न: इब्ने उ़सैमीन रहिमहुल्लाह से प्रश्न किया गया: वह गुण जिनका उल्लेख ह़ूर के लिए किया गया है; क्या वह गुण सांसारिक महिलाओं को भी सम्मिलित हैं?

उत्तर: आप रहिमहुल्लाह उत्तर देते हुए कहा: "जहां तक मुझे लगता है वह यह कि सांसारिक महिलाएं ह़ूर-ए-ईन से भी अधिक श्रेष्ठ हैं यहां तक कि प्रदर्शित गुणवत्ता में भी"।७. पय भी स्वर्ग की विलासिता को सम्मिलित है, जिनके ४ पाठ हैं, जल, दुग्ध, दारू एवं मधु, ये संपूर्ण पय दरियाओं में बहती हैं, जिनको विश्वासीगण पिएंगे, अल्लाह का कथन है :

(مَّثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى)

अर्थात: उस स्वर्ग की विशेषता जिसका धर्मनिष्ठ व्यक्तियों को वचन दीया गया है, यह है कि उस में जल के दरिया हैं जिसमें गंध नहीं होगा एवं दूग्ध के दरिया हैं जिसके स्वाद में परिवर्तन नहीं हुआ, दारू के दरिया हैं जो पीने वालों हेतु अधिकतम स्वादिष्ट है, एवं मधु के दरिया हैं जो कि स्वच्छ हैं।

जल के संबंध में अल्लाह का कथन (غير آسن) **:इसका अर्थ है: लंबे समय तक पानी के रुकने के कारण उसमें किसी तरह का (गंध) परिवर्तन नहीं होगा, एवं अल्लाह का कथन** (من خمر لذة للشاربين) **:इस श्लोक में इस बात की ओर संकेत है कि स्वर्ग का दारू सांसारिक दारू की तरह कड़वी नहीं होगी बल्कि मिष्ठ होगी इस दारू के संबंध में एक दूसरे श्लोक में है कि इस में** (غول) **नहीं है, अर्थात: इस में कोई ऐसी चीज़ नहीं जो पेट के दु: ख का कारण बने**:

(ولا هم عنها يُنزَفون)

अर्थात: इस दारू के पीने के कारण बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, एवं अल्लाह का कथन (من عسل مصفى) **:के अंदर इस बात की ओर ध्यान खींचना उद्देश है कि (स्वर्ग का मधु) हर उस गंदगी**

एवं मिलावट से सुरक्षित रहेगा जो समान रूप से सांसारिक मधु में हुआ करती है।

८. खाने एवं फल भी स्वर्ग की विलासिता का पाठ हैं, सहीह हदीस से यह बात सिद्ध है कि सर्वप्रथम स्वर्ग वासियों का सत्कार मछली के कलेजे के किनारे वाले भाग से कराया जाएगा, क्योंकि यह सबसे स्वादिष्ट होता है, और यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वतंत्र नौकर सौबान रज़ि अल्लाहु अन्हू की हदीस में है: एक यहूदी ज्ञानी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट आया एवं उसने परिक्षण लेने हेतु कुछ प्रश्न किया, इस हदीस में आया है कि उस व्यक्ति ने आपसे पूछा: जब वो स्वर्ग में प्रवेश कर जाएंगे तो उन्हें उपहार स्वरूप क्या भेंट दिया जाएगा, (उपहार का अर्थ वह सर्वप्रथम वस्तु है जो अतिथि को प्रेम एवं परिचित का प्रदर्शन करने हेतु भेंट दिया जाता है) तो आप ने उत्तर दिया: मछली के कलेजे का अतिरिक्त भाग, उसने कहा इसके पश्चात उनका भोजन क्या होगा? आपने फ़रमाया: उनके लिए स्वर्ग में बैल वध किया जाएगा जो उसके किनारों में चरता फिरता है। उसने कहा इस (भोजन) पर उसका पय क्या होगा? आपने फ़रमाया उस स्वर्ग के सलसबील नामक फ़ौवारे से... हदीस के अंत तक। (मुस्लिम: ३१५)

स्वर्ग वासियों के खाने एवं फल के संबंध में अनेक साक्ष्य हैं जिनका उल्लेख करने हेतु यहां स्थान नहीं है।

सारांशिक रूप में संपूर्ण विलासिताओं का उल्लेख अल्लाह के इस कथन में है:

(وأمددناهم بفاكهة ولحم مما يشتهون).

अर्थात: हम उनके हेतु फल एवं वांछित मांस की रेल-पेल कर देंगे।

९. ए मोमिनो! प्रलय में स्वर्ग वासी की सर्वश्रेष्ठ विलासिता अल्लाह की दृष्टि है, सुहैब रूमी रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: "जब स्वर्ग वाले स्वर्ग में प्रवेश कर जाएंगे, उस समय अल्लाह तआ़ला कहेगा: तुम्हें कोई चीज़ चाहिए जो मैं तुम्हें अतिरिक्त प्रदान करूं, वे कहेंगे: क्या तूने हमारे मुखड़ो को दीप्तिमान नहीं किया? क्या तूने हमें स्वर्ग में प्रवेश नहीं किया एवं नरक से सुरक्षित नहीं किया? रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: फिर अल्लाह तआ़ला पर्दा उठा देगा, तो उन्हें कोई चीज़ प्रदान नहीं की गई होगी जो उन्हें अपने सर्वोच्च पालनहार की दृष्टि से अधिक प्रिय हो"।

(मुस्लिम: १८१)

ए मुसलमानो! स्वर्ग एवं उसकी विलासिता के संबंध में बातें बहुत हैं, जिसको स्वर्ग एवं स्वर्ग वासियों की विलासिता के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा हो तो उसे इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह की पुस्तक [حادي الأرواح إلى بلاد الأفراح] **:का अध्ययन करना चाहिए।**

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता

हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निः संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد!

प्रशंसा ओं के पश्चात!

ज्ञात रखिए -अल्लाह आप पर कृपा करे- कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने पालनहार से प्रश्न किया एवं कहा: स्वर्ग में निम्नतम स्तर का (स्वर्ग वासी) कौन होगा? अल्लाह तआ़ला ने उत्तर देते हुए कहा: वह (ऐसा) व्यक्ति होगा जो संपूर्ण स्वर्ग वासी के स्वर्ग में भेज दिए जाने के पश्चात आएगा, तो उसे कहा जाएगा: स्वर्ग में प्रवेश कर ले, वह कहेगा: मेरे पालनहार! कैसे? लोग अपने स्थानों पर स्थित हो चुके हैं, एवं जो कुछ प्राप्त करना था वह कर चुके हैं, तो उसे कहा जाएगा: क्या तुम इससे प्रसन्न हो जाओगे कि तुम्हें संसार के राजाओं में से किसी राजा के देश के समान मिल जाए? वह कहेगा: मेरे पालनहार! मैं प्रसन्न हूं, अल्लाह कहेगा: वह तुम्हारा हुआ, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, पांचवी बार वह व्यक्ति (अचानक) कहेगा: मेरे पालनहार! मैं प्रसन्न हो गया, अल्लाह तआ़ला कहेगा यह (संपूर्ण) भी तेरा एवं इसके अतिरिक्त १० गुना भी तेरा, एवं वह सब कुछ भी तेरा जो तेरा मन चाहे, एवं जो तेरे नेत्रों को भाए, वह कहेगा: ए मेरे पालनहार! मैं प्रसन्न हूं, फिर (मूसा अलैहिस्सलाम) ने कहा: ए मेरे पालनहार! वह तो सबसे उच्च स्तर का है, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: यही वो व्यक्तिगण है जो मेरी इच्छा हैं, उनके सम्मान

को मैंने अपने हाथों से बोया है एवं उस पर मोहर लगा दी, (जिस के हित में चाहा सुरक्षित कर लिया) (सम्मान) का वह (स्थान) न किसी नेत्र ने देखा ना किसी कान ने सुना एवं न किसी के हृदय में इसके संबंध में विचार आया।

(इस हदीस को मुस्लिम: १८९ ने मुग़ीरा बिन शोअ़बा रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत किया है।)

१०. ए मुसलमानो! स्वर्ग एवं नरक सदैव स्थित रहने वाले हैं, वो ना ही नष्ट होंगे एवं ना ही समाप्त होंगे, इसका साक्ष्य क़ुरआन एवं हदीस के बाह्य ग्रंथ हैं, स्वर्ग में मोमिनों के एवं नरक में काफिरों से सदैव रहने के साक्ष्य क़ुरआन के अंदर कई एक का स्थान पर आए हैं, एवं जिन लोगों ने उनके नष्ट होने की बात की है उनका कथन इतना दुर्बल है कि उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह धार्मिक ग्रंथ के बाह्य अर्थ के विरुद्ध है, एवं अल्लाह तआ़ला ने लोगों को ऐसी बातों से संबोधित किया है जो वो भलीभांति समझ सकते हैं, इस कारणवश ग्रंथों का अवतार जिस प्रकार हुआ है उसी प्रकार बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार करना अनिवार्य है।

११. ए विश्वासियों की मण्डली! स्वर्ग और नरक दो ऐसी सृष्टि हैं जो अभी भी स्थित हैं, इसका साक्ष्य अल्लाह का कथन है :

﴿وسارعوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها السماوات والأرض أُعدَّت للمتقين﴾

अर्थात: अपने रब की क्षमा की ओर एवं उस स्वर्ग की ओर दौड़ो जिसकी चौड़ाई आकाश एवं पृथ्वी के समान है, जो धर्मनिष्ठ व्यक्तियों हेतु तैयार की गई है।

इस कथन के अंदर साक्ष्य स्वरूप (أُعِدَّتْ) अर्थात "तैयार की गई है"।

एवं हदीस से साक्ष्य: रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बिलाल रज़ि अल्लाहु अन्हू से कहना: मुझे वह पुण्य-कर्म बताओ जो तुमने इस्लाम के स्वीकार करने के पश्चात किया हो, एवं तुम्हारे यहां वह ज़्यादा आशा वाला हो, क्योंकि स्वर्ग में अपने आगे आगे तुम्हारे जूतों की आहट सुनी है।

(इस हदीस को बुख़ारी: ११४९ एवं मुस्लिम: २४५८ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)

इसी प्रकार स्वर्ग की सृष्टि एवं वर्तमान काल में इसके स्थित रहने का साक्ष्य रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कथन भी है: (أدخلت الجنة)"अर्थात: "मुझे स्वर्ग में प्रवेश कराया गया, वहां क्या देखता हूं कि मोतियों के गुंबद हैं एवं वहां की मिट्टी कस्तूरी के समान सुगंधित है..."।

(इसरा की हदीस का एक पाठ है जिसे मुस्लिम: १६३ ने अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है।)

ऐ अल्लाह के दासो! यह वह दस बातें हैं जो स्वर्ग पर विश्वास रखने को सम्मिलित हैं, प्रत्येक विश्वासियों हेतु इन से अवगत होना अनिवार्य है, ताकि स्वर्ग उसकी बुद्धि पर सवार रहे, एवं पुण्य-कर्म करने हेतु सतर्क रहे, एवं अभद्रता व आलस्य से वंचित रहे।

हे अल्लाह! मैं तुझसे ऐसी कथनी और हम करनी (की शक्ति) की मांग करता हूं जो स्वर्ग के निकट कर दे, एवं ऐसी कथनी एवं करने से अपनी शरण में ले ले जो मुझे नरक के निकट कर दे, हे अल्लाह! तू मेरे लिए धर्म को ठीक कर दे जो मेरे धर्म एवं संसार की सुरक्षा का माध्यम है, एवं मेरे सांसारिक जीवन को ठीक कर

दे जिसमें मेरा जीवन है, एवं मेरे प्रलय के दिन को ठीक कर दे जिस में मेरे अपने स्थान की ओर पलटना है, एवं मेरे जीवन को मेरे लिए प्रत्येक भलाई में बढ़ोतरी का कारण बना दे, और मेरे मृत्यु को मेरे लिए प्रत्येक प्रकार की बुराई से संतुष्टि का सामान बना दे।

हे हमारे पालनहार! हमें संसार में पुण्य दे, एवं प्रलय में भलाई प्रदान कर, एवं हमें नरक की यातना से वंचित रख।

اللهم صل وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखकः

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

०९६६५०५९६६६१

अनुवादः

तारिक़ बदर

binhifzurrahman@gmail.com